// मुझे मुस्कुराना पड़ा //

डा.टिकेश्वर सिन्हा

बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
कनक कलेवर अल-सुबह को
हौले-हौले उनके हँसने पर
शब़नम की रदनपंक्तियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।

बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
मध्यदिवस शीतोष्ण अवधि को
शांत श्वेत सरोवर की गोद पर
बाल तरंगों की अठखेलियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।

बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
रजकण मिश्रित सिंदूरी शाम को
नीड़ लौटे परिन्दों के कलरव से
गूँजित हरित तरुडालियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।

Scanned with OKEN Scanner